❋ तृतीय अध्याय ❋

साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन

* तृतीय अध्याय *

साधुराम दर्शक की कहानियों में चित्रित पारिवारिक जीवन

प्रस्तावना :

परिवार समाज की महत्त्वपूर्ण एवं प्राचीन संस्था है, जिससे मनुष्य और राष्ट्र का सर्वांगिण विकास होता हैं। मनुष्य के जीवन की आधारशील परिवार है, जिसपर खड़े होकर वह अपने सपनों को साकार करता हैं। बाल्यावस्था से मनुष्य को परिवार में प्रेम, सहानुभूति, सहनशीलता, आत्मत्याग, कर्तव्य पालन, ईमानदारी, सत्यता, आज्ञापालन, परोपकार, सहयोग आदि की शिक्षा दी जाती है।

भारतीय संस्कृति में परिवार का अनन्यसाधारण महत्त्व है, जिसमें मानव के आत्मसंरक्षण, वंश-संवर्धन, जातीय जीवन का विकास होता है। परिवार एक अलग वंशावली से संबंध रखता है। इसलिए मनुष्य के ख़ान-पान, रहन-सहन, रीति-रिवाज, भाषा, वेशभूषा, विचार आदि में भिन्नता दिखाई देती है। फिर भी मानव समाज की पूर्ण संरचना परिवार पर ही आधारित है। विश्व की प्रत्येक संस्कृति में वह विद्यमान है ''परिवार विश्व की परंपरागत, सार्वकालिक, सार्वजनिक, आधारभूत ,बाहयउद्देश्यपूर्ण, सामाजिक संस्था हैं, जो हर भूभाग में ही व्यक्ति को सामाजिक संबंधों का विकास होता है। अतः यह कहने में अत्युक्ति न होगी कि परिवार व्यक्ति को सामाजिक जीवन के लिए तैयार करता है।''[1] अतः परिवार पर समाज और समाज पर राष्ट्र, देश, विश्व आधारित हैं। मनुष्य के बिना परिवार और परिवार के बिना मनुष्य का अस्तित्व अस्तित्वहीन होता है व्यक्ति के संदर्भ में बालक से वृध्द बऩने तक ही प्रक्रिया परिवार में ही पूर्ण होती हैं। राष्ट्र के 'आदर्श नागरिक' बनाने का महत्त्वपूर्ण कार्य परिवार करता है। व्यक्ति के औपचारिक-अनौपचारिक, सामाजिक शिक्षा के बीज परिवार में बोये जाते हैं। वर्तमान युग में युवा पीढ़ी को पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण से रोकने का कार्य आज एक भारतीय सुसंस्कारित परिवार ही कर सकता है। इसलिए भारतीय समाज में परिवार का अस्तित्व मानव जाति को अमरत्व प्रदान करता हैं।

3.1 परिवार : अर्थ :

परिवार शब्द संस्कृत के 'परि' उपसर्ग पूर्वक 'पृ' धातु में 'धत्र' प्रत्यय के योग से बना है -

कोशकारों द्वारा परिवार का अर्थ -

3.1.1 प्रामाणिक हिंदी कोश - (सं.रामचंद्र वर्मा)

परिवार - पुं.(सं)

1. आवरण।
2. म्यान। कोश
3. किसी राजा या रईस के साथ उसे घेरे चलनेवाले लोग परिषद।
4. 'घर के लोग कुटुंब।
5. वंश। खानदान।
6. बाल बच्चे।
7. एक ही तरह की वस्तुओं का वर्ग। कुल। जाति।

3.1.2 संक्षिप्त शब्द सागर :

1. एक ही कुल में उत्पन्न मनुष्यों का समुदाय। कुटुंब। कुनबा खानदान। कुल।
2. किसी व्यक्ति को घेरे हुए चलनेवाले लोग। अनुगामियों का वर्ग।
3. स्वजनों या आत्मियों का सुमदाय। परिजन वर्ग।
4. किसी पर आश्रित व्यक्तियों का समूह।
5. एक स्वभाव या धर्म की वस्तुओं का समूह।
6. तलवार की खोली म्यान।
7. ढँकनेवाली चीज। आवरण। ढँकना।

3.2 परिवार : परिभाषा :

मनुष्य के व्यक्तिगत तथा राष्ट्रविकास के लिए महत्त्वपूर्ण परिवार को परिभाषित करने का कार्य निम्नलिखित विद्वानों ने किया है।

3.2.1 डॉ.डी.एम.मजुमदार :

''परिवार व्यक्तियों का एक समूह है जो एक छत के नीचे निवास

करते हैं और जो मूल और रक्त संबंधी सूत्रों से संबद्ध होते हैं तथा स्थान, रूचि एवं कृतज्ञता की अन्योंन्याश्रितता के आधार पर जाति की जागरूकता रखतें हैं।''[2]

3.2.2 मैक आइवर :

''परिवार वह समूह है जिसका आधार समिति और संयमित यौन संबंध है एवं जिसके द्वारा बालकों का जन्म एवं लालन-पालन होना संभव होता है परंतु परिवार का मुख्य आधार पुरूष और स्त्री का साथ रहना और संतान उत्पन्न करना ही है।''[3]

3.2.3 वील्स तथा हाइजर :

''परिवार एक सामाजिक समूह के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके सदस्य रक्त संबंधों द्वारा बध्द होते हैं।''[4]

3.2.4 ऑग्वर्न और निंमफॉक :

बच्चों या बिना बच्चोंवाले एक पति-पत्नी के या किसी एक पुरूष या एक स्त्री के अकेले ही अपने बच्चे सहित एक थोड़े स्थायी संघ को परिवार कहते हैं।''[5]

3.2.5 मैकाइवर एंड पेज :

परिवार यौन संबंधों द्वारा, परिभाषित एक ऐसा सुनिश्चित और स्थायी समूह है जिसमें संतान का जन्म और पालन-पोषण होता है।''[8]

तात्पर्य - उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि परिवार में रक्त संबंधी तथा जिनके निकटवर्ती संबंध हो ऐसे ही व्यक्ति आते हैं। समस्त परिभाषाओं में न्यूनाधिक मतभेद दिखाई देता हैं।

डॉ.मजुमदार ने परिवार की सांस्कृतिक एकता की उपेक्षा करके परिवार का वास्तविक अर्थ ग्रहण किया हैं। मैकआइवर ने परिवार का तात्पर्य स्त्री-पुरूष के यौन संबंधों के साथ बच्चों के पालन-पोषण की जिम्मेदारी से होता है, ऐसा अर्थ ग्रहण किया है। वील्स और हाइजर ने परिवार का अर्थ रक्त संबंध तथा समाजिक दायित्व माना है।

स्वतंत्रता के पश्चात् सामाजिक व्यवस्था में औद्योगिकरण, पाश्चात्यविचार-प्रणालियों का प्रभाव, बढ़ती हुई महँगाई, शिक्षाव्यवस्था आदि से परिवार संस्था में परिवर्तन दिखायी देने लगा हैं। अतः इन परिवर्तीत स्वरूप के साथ भारतीय परिवार को परिभाषित किया हैं।

3.3 परिवार : स्वरूप :

विश्व में पहले-पहल परिवार नहीं था, लेकिन जैसे ही लोगों की टोलियाँ बनने लगी और टोलियाँ स्थानिक होने लगी, उनके विकास के साथ समाज स्थापित हुआ। मानव सभ्यता के विकास के साथ पारिवारिक विकास को उजागर करना आवश्यक है।

''परिवार एवं समाज ही व्यापक-रूप में राष्ट्र होता है, अथवा यूँ कहा जाय कि परिवार, समाज, राष्ट्र, परस्पर एक-दूसरे के पूरक हैं, तो अत्युक्ति नहीं है।''[7] राष्ट्र के उत्थान तथा पतन में परिवार की महत्त्वपूर्ण एवं अहम् भूमिका होती है।

परिवार के स्वरूप का चार आधारों पर वर्गीकरण किया जाता हैं -

3.3.1 सदस्यों की संख्या के आधार पर निर्मित परिवार :

3.3.1.1 एकाकी परिवार :

इस परिवार में पति-पत्नी और उनके अविवाहित बच्चों का समावेश होता हैं।

3.3.1.2 विवाह संबंधी परिवार :

इसमें पति-पत्नी और उनके बच्चों के साथ विवाह द्‌वारा बने संबंधी आते हैं।

3.3.1.3 संयुक्त परिवार :

संयुक्त परिवार के अंतर्गत अनेक घनिष्ठ संबंधी आते है। 'रवीन्द्रनाथ मुखर्जी' के मतानुसार ''संयुक्त परिवार संयुक्त संगठन के आधार पर

निकट के नाते रिश्तेदारों की एक सहयोगी व्यवस्था है, जिसमें सम्मिलित सम्पति, सम्मिलित वास, अधिकारों तथा कर्तव्यों का समावेश होता है।''[8]

परिवार के मुखिया के अधिकक्ष में परिवार के सभी रक्त संबंधी तथा अन्य संबंधी भी मिल-जुल कर रहते हैं।

3.3.1.4 सम्मिलित परिवार :

ऐसे परिवार में सदस्य एक-दुसरे के रक्तसंबंधी न होकर भी परिवार की तरह एक साथ रहते हैं।

3.3.2 विवाह के स्वरूप के आधार पर निर्मित परिवार :

3.3.2.1 एक विवाह परिवार :

इसमें पति-पत्नी तथा उनकी संतान होती हैं।

3.3.2.2 बहु-विवाही परिवार :

एक स्त्री-अनेक पुरूष या एक पुरूष अनेक स्त्रियों के साथ विवाह करते हैं और एक ही परिवार में बहुपति तथा बहुपत्नी को लेकर एक साथ रहते हैं, उसे बहुविवाही परिवार कहते हैं।

3.3.3 पारिवारिक सत्ता के आधार पर निर्मित परिवार :

3.3.3.1 मातृसत्ताक परिवार :

'पति' पत्नी के परिवार का सदस्य बन जाता है। वंश की गणना माता से की जाती है। बच्चों का पालन-पोषण माता करती है तथा माता के नाम बच्चों की पहचान होती हैं।

3.3.3.2 पितृसत्ताक परिवार :

परिवार का अधिकारी पिता होता है। वंशनाम पिता के नाम से चलता हैं। परिवार में मुख्य निर्णय पिता ही लेते हैं, बच्चों को उनके अधिपक्ष्य में रहना पड़ता हैं। पिता की मृत्यू के बाद बड़ा बेटा उत्तराधिकारी बनता है।

3.3.4 भौगोलिक स्थिति के आधार पर निर्मित परिवार :

3.3.4.1 ग्रामीण परिवार :

इस परिवार में संयुक्त परिवार ज्यादातर होते हैं। धार्मिक क्रिया-कलाप, व्रत, त्यौहार, आतिथ्य सत्कार अधिक होता है। गृहस्थी का बोझ पुरूषों के साथ स्त्रियों पर भी होता है।

3.3.4.2 शहरी परिवार :

इस परिवार में आधुनिकता का अधिक प्रभाव रहता है। यह परिवार आकार में छोटा होता हैं।

3.3.4.3 आदिम परिवार :

इसमें परिवार तथा विवाह के अलग-अलग स्वरूप होते हैं। सामाजिक बंधन बहुत सुदृढ़ होते हैं। उनका विकास ग्रामीण तथा शहरी परिवारों के विभाग से कम हुआ है, इसलिए आदिम परिवार शहरी तथा ग्रामीण परिवारों से भिन्न होता हैं। संथाल, भील, नागा, गोंड, थारू, खस, खासी, कटनर, कंजर, बनजारे, जैनसार, बावर आदि प्रमुख भारतीय आदिम जनजातियाँ हैं। उनके परिवार के बारे में भी अलग-अलग नियम, रूढ़ि, प्रथा, परंपरा हैं।

तात्पर्य - पाश्चात्य राष्ट्रों की अपेक्षा भारत में परिवार का अधिक महत्त्व है। परिवार के कारण भारतीय संस्कृति आज भी कायम स्वरूपी स्थिर हैं। इसलिए हमारे राष्ट्र में परिवार को जीवन का आधार मानते हैं, उसके प्रति आदर एवं सम्मान की भावना लोगों के दिलों में पनप रहीं हैं। पाश्चात्य-सभ्यता, शिक्षा, संस्कृति का भारतीय युवा पीढ़ी पर होनेवाले परिणामों को रोकने का काम परिवार तथा परिवार के लोग ही कर सकते हैं।

3.4 परिवार : महत्त्व :

विश्व स्तर पर 'परिवार' एक महत्त्वपूर्ण संस्था है। सामाजिक जीवन में मनुष्य की पहली पाठशाला 'परिवार' है। नवजात शिशु अपने परिवार से ही विभिन्न प्रकार की शिक्षा हासिल करके बड़ा होता है। परिवार द्वारा अपने गुणों का

विकास करके स्नेह और सामाजिकरण की पूर्ति करता है।

बालक परिवार के प्रत्येक सदस्यों से कुछ न कुछ सीखता है। समाज के तौर-तरीके, भाषा, माता-पिता, भाई-बहनों का प्यार, नैतिक आदर्शों की शिक्षा प्राप्त करता है। परिवार की संस्कृति, वेशभूषा, आचार-विचार, आहार-विहार, रूचियाँ आदि को अपने नित्य-नियमित जीवन में लाता है।

आधुनिक समाज में परिवार का महत्त्व और भी बढ़ गया हैं। क्यों कि आज समाज में टूटते दाम्पत्य संबंध, प्रेम का अभाव, भाई-बहनों में दरार वैसे तो आज खून के प्रत्येक रिश्ते में दरार दिखाई दे रही है। परिणामतः पारिवारिक विघटन दिखाई देता है। परिवार के सदस्यों में भावात्मक संबंध जोड़ने के लिए आज समाज में सुसंस्कारित परिवारों की आवश्यकता हैं। अतः मानव जीवन में 'परिवार' अनन्य साधारण महत्त्व रखता है।

''परिवार से ही व्यापक रूप में समाज बनता है। वस्तुतः समाज कई व्यक्ति, परिवार, समूह, वर्ग, समिति, आदि का संगठित स्वरूप है। अत एवं इनके संबंधों, क्रिया-कलापों, मान्यताओं, विश्वासों के आधार पर ही समाज की विशेष छवि बनती-बिगड़ती हैं, समाज में गरीब-अमीर, उच्च-निम्न आदि कई प्रकार का वर्ग-भेद पाया जाता है, लेकिन समाज का मुख्य उद्देश्य है मानव कल्याण! जो समाज 'मानव कल्याण' भावना से विगलित हो जाता है, उसका पतन अवश्यभावी है।''[9]

तात्पर्य -

(1) मनुष्य की उन्नति तथा उसके अस्तित्व को बनाये रखने के लिए परिवार की आवश्यकता हैं।

(2) बालक का सर्वांगिण विकास परिवार में ही होता है तथा भारतीय संस्कृति का अस्तित्व भी परिवार पर निर्भर हैं। स्पष्ट है कि व्यक्ति के सर्वांगिण विकास के लिए सामाजिक दृष्टि से परिवार का अनन्य साधारण महत्त्व हैं।

इसी परिवार का चित्रण साधुराम दर्शक की कहानियों में किस रूप

में हुआ है, यही प्रस्तुत अध्याय के विवेचना का विषय है।

3.5 साधुराम दर्शक जी की कहानियों में चित्रित दामप्त्य जीवन :

प्रस्तावना :

परिवार का मूलधार 'दाम्पत्य जीवन हैं। परिवार का अभिन्न पक्ष दाम्पत्य जीवन है, सुखी परिवार के लिए स्नेहपूर्ण, विश्वासार्ह, सुखमय, शांतिपूर्ण 'दाम्पत्य' की आवश्यकता है। स्त्री-पुरूष के लौकिक, धर्ममान्य और आध्यात्मिक संबंध ही दाम्पत्य जीवन है।

वासुदेवशरण अग्रवाल का मत है - "अनेक कुटुम्बों से स्त्रियाँ अपना-अपना व्यक्तित्व लाती हैं और अनेक पृथक जल कुटुम्ब के सम्मिलित सरोवर में मिल जाता है, उस नये कुटुम्ब का जिसमें वे मिलती हैं, जितना विस्तार हो, जो उसकी शक्ति हो, जो उसका वैभव हो, उसके सब क्षेत्रों, सब स्तरों पर स्त्री हो उसे चाहे जितने अधिकार दीजिए और उसके कर्तव्यों को भी वैसे ही प्रभावशाली और व्यापक बनाइए जैसे पुरूषों को इसमें कुछ आपत्ति न होनी चाहिए। यह तो हिंदु परिवार के सनातन विधान के अनुकूल होगा।"[10] अर्थात् परिवार में स्त्री का महत्त्व अनन्यसाधारण होता हैं, क्योकि स्त्री अपनी यथाशक्ति के अनुसार कुटुंब का विस्तार करती है। वर्तमान युग में दाम्पत्य जीवन में परिवर्तन दिखाई दे रहा हैं। आज स्त्री-पुरूष समानता का नारा लगाया जा रहा है। मध्ययुगीन काल में पत्नी, पति की दासी, सेविका, उपभोग का साधन मानी जाती थी, लेकिन वर्तमान युग में पत्नी-पति के कंधे से कंधा भिड़ाकर काम करती हैं। आज स्त्री-पुरूष की जीवनसाथी, अर्धांगिनी, प्रियतमा, दोस्त, सहयोगी, सख़ी आदि के रूप में दिख़ाई देती हैं।

बदलते परिवेश के अनुसार स्त्री पारिवारिक, सामाजिक, आर्थिक जिम्मेदारियों को निभाते हुए समाज को एक नई दिशा प्रदान कर रही हैं, लेकिन पाश्चात्य संस्कृति का अंधानुकरण करते हुए उसमें आत्मकेंद्रितता आ गयी हैं। उसमें त्याग, संयम, सेवा, समर्पण, श्रद्धा आदि गुणों का ऱ्हास हो रहा है। इसका परिणाम परिवारों पर होता दिखाई दे रहा है। परिणामस्वरूप दाम्पत्य संबंध विघटित

होते नज़र आते हैं।

साधुराम दर्शक की कुछ कहानियों में सफल दाम्पत्य जीवन का चित्रण निम्नलिखित गुणों के आधार पर पाया जाता हैं -

3.5.1 सफल दाम्पत्य जीवन

3.5.1.1 समझदारी

3.5.1.2 सेवाभाव तथा पति परायणता

3.5.1.3 आत्मसमर्पण

3.5.1.4 निष्ठा

3.5.1 सफल दाम्पत्य जीवन :

पति-पत्नी के अटूट संबंध परिवार के प्राण हैं, जिसके बल पर परिवार की साँसे चलती हैं। पति-पत्नी का रिश्ता प्यार, विश्वास, सेवा, संयम, त्याग, समर्पण का होता हैं, एक दूसरे के सुख-दुख को बाँटते हुए, एक ही घरमें मिल-जुल कर रहते हैं। पति-पत्नी के संबंधों के बारे 'प्रमिला कपूर' का मत हैं - ''हर व्यक्ति के जीवन में चाहे वह कितना ही सुखमय क्यों न हो एक न एक दिन झगड़े उठते ही हैं। इसलिए झगड़े और कठिनाइयों के अभाव का ही नाम सुखी दाम्पत्य जीवन नहीं है। सुखी दाम्पत्य जीवन ही पति-पत्नी द्वारा आपसी मेल-मिलाप और चतुराई से इन समस्याओं को सुलझाना, कभी कभार मत-भेद होते रहने के बावजूद भी यदि वैवाहिक जीवन में महत्त्वपूर्ण मसलों पर उनमें मतैक्य रहता है, तो उनका दांपत्य जीवन सुखदायक बना रहेगा।''[11] अर्थात दाम्पत्य जीवन के सुख का आधार हैं; पति-पत्नी का आपसी प्रेम, विश्वास और अपेक्षा, जिनके माध्यम से उनकी गृहस्थी की गाड़ी अविराम चलती रही है।

साधुराम दर्शक की कहानियों में सफल दाम्पत्य का सशक्त तथा मार्मिक चित्रण यथार्थ रूप में स्वाभाविक ढंग से किया गया है। सुखी व स्नेहपूर्ण दाम्पत्यजीवन के लिए पति-पत्नी में परस्पर स्नेह और सहयोग अनिवार्य है। वैवाहिक बंधन, स्त्री-पुरूष के जीवन का पवित्र बंधन है, जिसपर परिवार खड़ा रहता है। वैवाहिक आदर्श के मूल में श्रद्धा, सम्मान, विश्वास, अपेक्षा आदि का संचित अमृत होता है, जो दाम्पति को जीवन-पर्यन्त उत्साह, स्फूर्ति, आनंद और

नवजीवन प्रदान करता है और वे एक-दूसरे के प्रति सहयोग, सहभावना, सहिष्णुता का परिचय देता है।

सफल दाम्पत्य जीवन के लिए निम्नलिखित गुणों की आवश्यकता है -

3.5.1.1 समझदारी :

पति-पत्नी में समझदारी सफल दाम्पत्य जीवन के लिए आवश्यकता है। छोटी-छोटी बातों से उनका प्यार तथा विश्वास बढ़ता है और एक-दूसरे को समझने की कोशिश की जाती हैं। 'असली हकदार' कहानी के सुरेन्द्र और गुड्डी एक-दूसरे से बहुत प्यार करते हैं। सुरेन्द्र 'ओवर टाईम' के पैसे ले आता है, तो वह अपनी पत्नी के लिए साड़ी खरीदना चाहता हैं, लेकिन गुड्डी अपने पति के लिए उन्हीं पैसों से पॅन्ट पीस खरीदना चाहती हैं। दूसरे दिन बाजार जाने का वादा करके सुरेन्द्र दफ्तर चला जाता है, उसी समय गुड्डी समाचार पत्र में पढ़ती है कि बिहार में सूख़ा पड़ने के कारण अनेक लोगों की मौत हो रही हैं, तथा उन्होंने मदद के लिए भारतीय लोगों को निवेदन किया है। और गुड्डी समाचार पत्र पढ़ते ही सुरेन्द्र ने दिये हुए पैसे सूखा पीड़ित लोगों को मनिऑर्डर द्वारा भेज देती हैं। श्याम को जब सुरेन्द्र सब कुछ समझ जाता है। और उसे अपनी इस रूप में बहुत अच्छी लगती हैं - ''उसने उसे भुजाओं में भर लिया और बोला,''नहीं तुमने कोई गलत काम नहीं किया। तुमने अच्छा किया, बहुत अच्छा! इन रूपयों के जो असली हकदार हैं, उनके पास पहुँचा दिया।''[12]

तात्पर्य -

(1) पति अगर समझदार हो, तो पत्नी की अच्छाइयों पर मुग्ध होकर सुख़मय जीवन बिताता है।

3.5.1.2 सेवाभाव तथा पतिपरायणता :

सफल दाम्पत्य जीवन में पतिपरायण सेवाभावी पत्नी का रूप पति को प्रसन्न, विश्वासमय लगता हैं, जिससे पति-पत्नी के स्नेह में वृध्दि होती हैं। 'एक और सावित्री' कहानी की नंदा अपने पति से दूर रहकर भी उसके लिए जी तोड़ मेहनत करती है। अपने पति को बीमारी से बचाने के लिए अस्पताल भेजती

हैं। 'नंदा' मजदूरी करके घर की जिम्मेदारी निभाते हुए पति के दवाई का खर्चा उठाती हैं। खूद बीमार हैं लेकिन बीमारी के हालत में भी पति के अस्पताल का खर्चा उठाने के लिए दिन रात काम करती हैं। जब बीमारी के हालत में एक दिन नंदा काम पर जाती है तो उसका मालिक काम करने से मना करते हुए उसे आश्चर्य से कहता हैं - ''अरी नंदा तू यहाँ ! मरना है क्या? तुझे डॉक्टर ने दो सप्ताह तक पूर्ण विश्राम करने को कहा है।''[13] अर्थात् नारी अपने पति के प्रेम, विश्वास, अपेक्षाओं को सही अर्थ में निभाने की कोशिश आखरी साँस तक करती हैं। मानो वह आधुनिक काल की सावित्री बनकर पति के प्राण बचाने के लिए मृत्यूरूपी यमदेवतासे लड़ती हैं।

तात्पर्य -

(1) एक पत्नी अपने पति को बचाने के लिए जीवन के हर संघर्ष को पार करने की कोशिश करती हैं।

(2) पति-पत्नी के संबंध में पारस्परिक प्रेम, स्नेह के साथ विश्वास, सेवाभाव, एक-दूसरे की जिम्मेदारी निभाने में तत्परता हो तो दूर रह कर भी पति-पत्नी का प्रेम कम नहीं होता।

3.5.1.3 आत्मसमर्पण :

आत्मसमर्पण के कारण पति-पत्नी किसी पराये या सगे संबंधियों द्वारा किये हुए अपमान या उपेक्षाभाव को सह नहीं पाते। 'पिशाच्च-लीला' कहानी का बिरजू राजपूतों की परित्यकत्या बहू से कोर्ट में विवाह करके चम्पा के साथ सुखमय जीवन बिताने लगता है। एक साल के बाद राजपूतों को इसी बात का पता लगता है और वे बिरजू और चम्पा के गुनाहों की सजा सुनाने के लिए गाँव में सभा बुलाते हैं और चम्पा को छोड़ने का आदेश दिया जाता हैं। बिरजू उसी समय भरी सभा में राजपूतों को बता देता है कि चम्पा को उसके पति ने छोड़ा है और आज वह मेरी पत्नी है। फिर भी अगर आप उसका भला चाहते हैं तो - ''मेरी एक मामूली शर्त है। चंपा रसोई बनायेंगी, खर्च मैं करूंगा और आप सब लोग खायेंगे.... और फिर उसके ससुरालवाले डोली में बिठाकर बहुओं की तरह उसे अपने घर ले जायेंगे।''[14] जहाँ पति-पत्नी में एक दूसरे के प्रति प्रेम, श्रद्धा

सहृदयता, आत्मसमर्पण की भावना पायी जाती हैं वहाँ आंतरधर्मिय विवाह भी सफल हो जाते हैं।

तात्पर्य -

(1) आत्मसमर्पण से ही पति-पत्नी में पारस्पारिक त्याग एवं बलिदान की प्रवृत्ति का उदय होता है।

(2) पति-पत्नी का एक-दूसरे के प्रति सम्मान एवं श्रद्धाभाव उनके दाम्पत्य जीवन का आधार बन जाता हैं।

3.5.1.4 निष्ठा :

भारतीय परंपरा में पत्नी का पति के प्रति निष्ठावान रहना पत्नी का प्रमुख कर्तव्य माना गया है। दाम्पत्य जीवन में अधिकतर पत्नी निष्ठावान रहती, पति के लिए ऐसा कोई सामाजिक बंधन नहीं हैं। उसकी निष्ठा इतनी पराकाष्टा की होती हैं कि पति की क्रूरता, यातना, आक्रोश, कठोर व्यवहार एवं विचारों की भिन्नता के बावजूद भी वह समर्पणशील होती हैं और अंत तक पति को अपना सर्वस्व मानती हैं। 'खलनायक' कहानी की नीलू अपने मुँह बोले भाई निर्मल के साथ शादी के बाद भी मिल-जूल कर रहती हैं। जैसे पहले रहती थी, लेकिन उसका पति निर्मल एवं नीलू पर संदेह करता हैं। इसलिए वह निर्मल से रिश्ता तोड़ देती है। फिर भी निर्मल उसे अपनी बहन मानता है। इसी रिश्ते से वह नीलू की बच्ची को देखने उसके घर जाता है उसी समय नीलू का पति काम पर जाने के लिए तैय्यार होता है - ''जाते समय उन्होंने नीलू को ऐसी नज़रों से देखा था, मानों कह रहे हों - ''लों कर लो मजा अब !''[15] इतना सब सहने के बाद भी नीलू अपने को कुछ नहीं कहती यह उदारता सिर्फ नारी में ही दिखाई देती हैं। भारतीय नारी पति के गुण-अवगुणों से अवगत होती हैं, पति के लिए वह सभी रिश्तों से मूँह फेर सकती हैं। अपने पति की आज्ञा में रहना अपना स्त्री धर्म मानती है। पतिव्रता सभी कर्तव्यों को एक निष्ठता से निभाने की कोशिश करती हैं।

तात्पर्य -

(1) दाम्पत्य जीवन में जितना त्याग, समर्पणशीलता, निष्ठा आत्मियता भारतीय नारी के दयालु मन में होती हैं, उतनी किसी पाश्चात्य नारी में नहीं

होती।

(2) पुरूष प्रधान समाज ने नारी को हर समय उपेक्षित रखा है।

निष्कर्ष -

प्रस्तुत विवेचन से स्पष्ट होता है कि 'साधुराम दर्शक' की कहानियों में सफल-दाम्पत्य जीवन बहुत कम परंतु सशक्त रूप में चित्रित हुआ है, जिसमें दांपत्य जीवन की विविध पहलुओं से उजागर किया है।

सुखी दाम्पत्य जीवन के लिए निम्नलिखित गुण आवश्यक है -

(1) पति-पत्नी में पारस्परिक स्नेह और समझदारी आवश्यक है।

(2) पति-पत्नी में पारस्परिक स्नेहपूर्ण साहचर्य आवश्यक है।

(3) पति-पत्नी में सेवाभाव महत्त्वपूर्ण है।

(4) पति-पत्नी के दिल में एक दूसरे के प्रति सम्मान होना चाहिए।

(5) पति-पत्नी में श्रद्धा युक्त प्रेम होना चाहिए।

(6) पति या पत्नी का एक दूसरे के प्रति समर्पण महत्त्वपूर्ण है।

3.5.2 असफल दाम्पत्य जीवन :

प्रस्तावना :

असफल दाम्पत्य जीवन में पति-पत्नी के संबंधों में स्नेह, प्यार, अपनत्व, अटूट स्नेह, मिलने की उत्कटता होने के बजाय तनाव, संघर्ष, झगड़ा, गाली-गल्लौच आदि होता है। विवाह के पश्चात् पति-पत्नी में आत्मसमर्पण, सहृदयता, वैचारिक एकता, सद्भावना, अनुशासन, सौहार्द्रता का अभाव हो, तो सफल दांपत्य संबंध बने रहना कठिन हो जाता हैं।

दाम्पत्य-जीवन का सहज, सतत चलना ही पारिवारिक सुख का प्रतीक है। जब पति-पत्नी में किसी कारणवश मन-मुटाव हो जाता है, विचार-वैषम्य होता है, तो निश्चित ही दाम्पत्य जीवन दुखमय होने लगता है।

असफल दांपत्य जीवन के बारे में 'आशा बागड़ी' का मत हैं -

''आधुनिक कालखंड़ में दाम्पत्य सुखी और शांति प्रदायक नहीं है उसके अनेक कारण भी हो सकते हैं। जीवन के आधुनिकीकरण से पति-पत्नी के संबंध में बिगाड़ उत्पन्न होना स्वाभाविक है।''[16] अर्थात आधुनिकीकरण से आज पति-पत्नी में पहले की तरह स्थायित्व नहीं रहा। लेकिन परिवार की उन्नति तथा अधोगति दांपत्य जीवन पर निर्भर रहती हैं।

दांपत्य जीवन विघटन के प्रमुख कारण निम्नलिखित हैं -

3.5.2.1 अनपढ़ता तथा कुरूपता

3.5.2.2 अर्थाभाव की समस्या

3.5.2.3 पशुता एवं क्रूरता का व्यवहार

3.5.2.4 पति या पत्नी की रूग्णता के कारण दाम्पत्य जीवन में दरार

3.5.2.1 अनपढ़ता तथा कुरूपता :

'चन्द्रकिरण' कहानी में 'चन्द्र' का अनपढ़ तथा गँवार रूप देखकर उसका पति नरेन्द्र शहर लौट जाता है। चन्द्र अपने पति से मिलने के लिए तड़पती रहती हैं। चन्द्र नरेन्द्र को पत्र लिखकर अपने शहर में ले जाने के लिए कहती हैं। लेकिन नरेन्द्र उसे जवाब में पिता को पत्र लिखता है -''चन्द्र को फजूल के पत्र लिखने में रोकें और यदि चन्द्र का दिल घर में नहीं लगता, तो उससे कहें कि वह जाकर किसी कुंए में छलांग लगा ले,''[17] अर्थात भारतीय समाज में अगर कोई पत्नी अपने पति को रीझा नहीं सकती, मोहित नहीं कर सकती, तो उसे जीने का कोई हक नहीं हैं, पुरूष स्त्री की उपेक्षा करने के अनेक कारण हैं, उन में से एक स्त्री की अनपढ़ता, कुरूपता है हमारे समाज में हमेशा स्त्री पुरूष पर निर्भर रही हैं इसलिए पुरूष स्त्री की उपेक्षा करता हैं।

तात्पर्य -

(1) साधुराम दर्शक ने दाम्पत्य-जीवन के वैषम्य का चित्रण किया हैं।

(2) नारी के लिए कुरूपता, अनपढ़ता अभिशाप हैं, कलंक हैं जिससे वह पति द्वारा उपेक्षा का पात्र बनती हैं।

3.5.2.2 अर्थाभाव की समस्या :

"मार्क्स के अनुसार भाई-भाई का पति-पत्नी का, बाप-बेटे का, राष्ट्र-राष्ट्र का संबंध अर्थ के ही आधार पर बनता बिगड़ता है।"[18] अर्थात अर्थ ही सभी रिश्तों की नींव हैं। सदैव 'अर्थ' ने मनुष्य के जीवन में महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। "समाज और व्यक्ति के जीवन से 'अर्थ' निकाल दीजिए, समूचा ढाँचा धराशायी हो जायेगा।"[19] यह कथन यथार्थ है समाज और व्यक्ति के कार्यकलाप अर्थ के सहारे ही चलते हैं। आज 'अर्थ' दुनिया का संचालन करता है। अर्थाभाव की समस्याने निम्नवर्ग को समस्त सुविधाओं से वंचित रखा है। रोटी-कपड़ा-मकान-स्वास्थ्य-शिक्षा जैसी प्राथमिक सुविधाएँ भी उन्हें उपलब्ध नहीं हो रही हैं। 'दीवारें बोलती है' कहानी में मंगू अर्थ के अभाव से अपने परिवारवालों को दो वक्त की रोटी नहीं दे सकता। इसलिए पत्नी और बच्चों के साथ आत्महत्या करता हैं। जिस परिवार में पेटभर खाना मिलना मुश्किल होता हैं, वहाँ सफल दाम्पत्य जीवन की अपेक्षा करना ही व्यर्थ हैं। लेखक मंगू की स्थिति का इस तरह वर्णन करते हैं - "घर का ढ़ांचा धीरे-धीरे बिल्कुल ही बिखर गया। मंगू बच्चों और पत्नी की देखभाल करे तो काम पर कैसे जाय? काम पर न जाय तो गुजारा कैसे हो?[20] अर्थात निम्नवर्गीय परिवार का अर्थगणित इतना अमानवीय तथा रोगयुक्त होता हैं कि सफल दाम्पत्य की अपेक्षा ही निष्फल हैं।

'चन्द्रकिरण' कहानी में नरेन्द्र के दोनों विवाह असफल दिखाई देते हैं। पहली पत्नी की कुरूपता तथा अनपढ़ता को देखकर छोड़ देता हैं। तथा दूसरी पत्नी के अधिक खर्चों से तंग आता है। लेखक का यहाँ पर मतंव्य हैं -"फैशनेबल पत्नी के बढ़े खर्चों के कारण घर में हर समय मचे रहनेवाल महाभारत से बचने के लिए वह कुछ दिनों के लिए गाँव जा रहा था।"[21] अर्थात अर्थ के अभाव में अतृप्त अपेक्षाएँ, तनाव एवं मानसिक असंतुष्टि जीवन को विषम बनाती हैं।

तात्पर्य -

(1) 'अर्थाभाव' पति-पत्नी में तनाव, खीज तथा अलगाव निर्माण करता हैं।

(2) 'अर्थ' का दानव पति-पत्नी की कोमल भावनाओं को कुचल देता हैं।

3.5.2.2 पशुता एवं क्रूरता का व्यवहार :

प्राचीन काल में पत्नी-पति को देवता मानकर पूजती थी और पति उसे सम्मान देता था। आज के युग में पति-पत्नी के संबंधों में स्नेह, विश्वास और समर्पण की भावना न के बराबर हैं। इसलिए पति-पत्नी में स्नेह की कमी दिखाई देती हैं। परिणामतः दाम्पत्य जीवन में दुरियाँ निर्माण होकर दयनीय स्थिति निर्माण हो गयी हैं।

'पर कही तितली' कहानी में ज्योति का पति तथा ससुराल वाले उस पर अन्याय-अत्याचार करते हैं। किसी भी कारण से घुस्सा होकर उसका पति लातों, जंजीरों, थप्पड़ों से मारता-पीटता हैं। एक दिन ज्योति का मुँह बोला भाई उसके घर आता हैं, तो वह कहता है - ''मेरे शरीर का रोम-रोम सिहर उठा.... सारी पीठ सूजी हुई थी और उस पर जंजीर के नीले निशान, जिन पर खून रिस कर जम गया था, इस तरह उभरें हुए थे जैसे छापे से छापे गये हों। उसकी बाहों और गर्दन पर भी वैसे ही निशान थे और चेहरा थप्पड़ों और मुक्कों की मार से सूज रहा था।''[22] अर्थात कई परिवारों में ऐसे स्त्रियों पर अमानवीय व्यवहार करते हैं। ज्योति के दुःख दर्द में उसके पति को कोई दिलचस्पी नहीं हैं।

तात्पर्य -

(1) 'पर कही तितली' पति के क्रूर कारणामों के साथ पत्नी की अनंत वेदनाओं को उद्घाटित करती है।

(2) 'ज्योति' के माध्यम से लेखक ने समाज में चित्रित शोषित स्त्रियों की वेदनाओं को उजागर किया हैं।

3.5.2.4 पति या पत्नी की रूग्णता के कारण दाम्पत्य जीवन में दरार :

वैवाहिक जीवन में शारीरिक रूग्णता के कारण दाम्पत्य जीवन में विसंगति दिखाई देती हैं। 'दीवारें बोलती है' कहानी में 'मंगू' अपनी पत्नी की बीमारी से तंग आता हैं। और हमेशा परेशान रहने लगता हैं। इस कहानी में उसका वर्णन इस तरह से किया हैं - ''मंगू तो जैसे पागल ही हो उठा था बात-बेबात वह

पागलों की तरह बच्चों को पीट देता और फिर पागलों की तरह स्वयं रोने लगता। काटों से तो अब बिस्तर से उठा भी नहीं जाता था। घर में जैसे कोई भूत घुसा हो, जो लगातार घर की चीजें उठा-उठा कर कहीं ले जा रहा हो....।''[25] अर्थात पत्नी की लंबी बीमारी ने दांपत्य जीवन को किस प्रकार ध्वस्त किया है। इसका चित्रण कहानी में किया हैं। 'सांपन' कहानी में रामकली पति की बीमारी से त्रस्त है वह अकेली घर की जिम्मेदारी को निभाती है। 'एक और सावित्री' में नंदा अपने पति को बीमारी से बचाने के लिए मजदूरी करती है। 'पर कही तितली' कहानी में ज्योति का जब गर्भपात हो जाता है और वह पागल हो जाती है तो उसके ससुराल वाले उसे मायके भेज देते है। उसी समय से आज तक कोई भी कभी उसे देखने तक नहीं आता हैं।

तात्पर्य :

(1) लेखक ने अपनी कहानियों में दाम्पत्य जीवन की बारीकियों का सूक्ष्मता से अंकन किया हैं।

(2) पति या पत्नी की बीमारी में दोनों का एक-दूसरे के प्रति विषम व्यवहार हैं। अगर बीमारी में पति या पत्नी सेवा करते है तो तटस्थ रहकर दयाहीन तथा विवश होकर ही।

(3) अधिकतर दाम्पत्य जीवन बीमारी में चाहे शारीरिक हो या मानसिक दुःखी तथा स्नेहहीन बना दिखाई देता है।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि साधुराम दर्शक जी की कहानियों में सफल दाम्पत्य जीवन तथा असफल दाम्पत्य जीवन के दोनों रूपों का चित्रण हुआ है। फिर भी सफल दाम्पत्य जीवन से असफल दाम्पत्य जीवन का ही उद्घाटन अधिक मात्रा में हुआ है। वर्तमान युग में दाम्पत्य जीवन आर्थिक कठिनताओं, समस्याओं के कारण विषम बन रहा है।

'पति-पत्नी' परिवार का आधार माने गये हैं। दाम्पत्य जीवन

सुखमय बनाने के लिए प्रेम, सहयोग, त्याग, समझदारी, अपनत्व की आवश्यकता हैं। परिवार में दाम्पत्य संबंध आनंदमय हो, तो पूरा परिवार आनंदी, हँसता-खेलता रहता हैं। 'साधुराम दर्शक की कहानियों में 'निम्नवर्ग' केंद्र में रहा है।' अतः निम्नवर्ग में असफल दाम्पत्य जीवन का महत्त्वपूर्ण कारण अर्थाभाव, बीमारी, अभाव, प्राथमिक आवश्यकताओं की कमी यही रहे हैं फिर भी 'एक और सावित्री' कहानी के माध्यम से यह चित्रित किया है कि सफल दाम्पत्य जीवन के केंद्र में मानवीय संवेदनाएँ भी निहित हैं। पति-पत्नी का दाम्पत्य जीवन सुखमय, संतोषजनक तथा आनंदमय रह सकता है इसका चित्रण 'असली हकदार', 'एक और सावित्री' आदि कहानियों में किया है और पाठकों को भी मानो संदेश दिया है कि समस्याओं को पति-पत्नी अपनी समझदारी तथा विश्वास के सहारे सुलझा सकते है।

दाम्पत्य जीवन पारिवारिक जीवन का प्रमुख स्तंभ है। दाम्पत्य जीवन में सुख और आनंद का अभाव क्यों पाया जाता है? पति-पत्नी के आपसी मधुर संबंध क्यों खोने लगे है। तलाक की माँग क्यों बढ़ रही है? आदि प्रश्नों के कई कारण हो सकते है, उनमें से कुछ कारणों पर प्रकाश डालने का प्रयास लेखक ने किया है। जैसे कुरूपता, विचारों में असामंजस्य, समझदारी का अभाव, पशुता एवं क्रूरता का व्यवहार, अर्थाभाव की समस्या, पति की उपेक्षा, अविश्वास, कलह स्त्री को हीन समझने की भावना आदि।

असफल दांपत्य जीवन का मूल कारण 'अर्थ' हैं। 'दीवारें बोलती है', 'एक वितरागी के नोट्स' आदि कहानियों में 'अर्थ' के कारण ही दांपत्य जीवन असफल बना हैं। जीवन के हर क्षेत्र में स्त्री शोषित रही है। स्त्री चाहे किसी भी वर्ग की क्यों ना हो, वह पुरूष के अधीन ही होती है। 'पर कही तितली', 'चन्द्रकिरण', 'एक वितरागी के नोट्स' आदि कहानियों में अशिक्षा, कुरूपता, परिवार द्वारा शोषित नारी आदि के कारण असफल दांपत्य जीवन को उद्घाटित किया है।

विवेचित कहानियों के माध्यम से निम्नलिखित घटक दांपत्य जीवन को दूषित, विघटित एवं असफल बनाने के कारण सिद्ध होते है -

(1) समझदारी एवं विश्वसनीयता का अभाव

(2) रूग्णता या बीमारी से पति या पत्नी में अलगाव

(3) आर्थिक विपन्नता

(4) अशिक्षा तथा कुरूपता के कारण पति-पत्नी में अलगाव

(5) पत्नी के साथ पति का पशुता एवं क्रूरता पूर्ण व्यवहार

3.6 पारिवारिक जीवन के विविध आयाम :

3.6.1 माता-पिता और संतान संबंध :

प्रस्तावना :

भारतीय समाज में माता-पिता का महत्त्वपूर्ण स्थान हैं। प्रथम मातृवंदना तद्नंतर पितृवंदना और आचार्य वंदना की जाती है। संतान के जीवन की ऊँची इमारत सही अर्थ में खड़ी करने वाले माता-पिता ही होते हैं। अपने बच्चों का उत्कर्ष, हित देखने के लिए उनकी आँखे तरसती रहती हैं। जीवन में सभी तरह के कष्टों, दुखों का सामना करते हुए माता-पिता अपने संतानों को सुख, आनंद की छाया देना चाहते हैं। लेकिन वर्तमान युग में पाश्चात्य सभ्यता के प्रभाव मशीनरिकरण, औद्योगिकरण, व्यस्तता, आर्थिक विषमता आदि कारणों से इन पवित्र संबंधों में दरारे निर्माण हो रही है।

विषमताओं एवं संघर्षो से जूझते मनुष्य के लिए आज अपना जीवन बोझ के समान लगने लगा है, तो वह अपने रिश्तों को निभाने की क्या कोशिश करेगा? आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति ने मनुष्य की मनुष्यता को दबोच लिया है। आज परंपराएँ, मान्यताएँ बदल गयी है। मँहगाई, साधनों का सीमित होना, यांत्रिकता से उत्पन्न ठंडापन इन सब के बीच में व्यक्ति आज उलझ गया है। परिणामस्वरूप वह स्वार्थी तथा अजनबी होता चला जा रहा है, आत्मीयता के बदले औपचारिकता बरतने के लिए विवश होता जा रहा है। ''परिवार, पारिवारिक-सदस्यों का एक शाश्वत समूह है, जिसमें उनके आपसी संबंधों का बहुत महत्त्व होता है। यह संबंध एक दूसरे के त्याग, बलिदान, सहिष्णुता, निष्ठा, विश्वास आदि गुणों पर निर्भर रहते है, अतः पारिवारिक संबंधों को मजबूत बनाने के लिए, प्रत्येक सदस्य में इन

गुणों का अन्तर्निहीत होना आवश्यक हैं।'' अर्थात पारिवारिक मजबूती उनके आपसी संबंधों पर निर्धारित है।[24]

दर्शक जी की कहानियों में माता-पिता एवं संतान इनके निहीत संबंधों के विविध पहलुओं का उद्‌घाटन मार्मिकता से किया गया है।

3.6.2 माता-पिता और संतान संबंध :

हमारे देश में परिवार के अंतर्गत पिता का आदरणीय स्थान है, परिवार का वह कर्तव्यदक्ष व्यक्ति होता है। 'शब्द कल्पद्रुम' के अनुसार 'पति रक्षल्यपत्यं यः स पितः।'' अर्थात संतान की रक्षा करनेवाला अपने संतान से सबसे अधिक प्रेम करनेवाले पिता ही होते हैं। सिर्फ संतान को जन्म देने से पिता का कर्तव्य समाप्त नहीं होता, उसका सामाजिक महत्त्व संतान के भरण, पोषण तथा शिक्षा की जिम्मेदारी उठाने में है। 'डॉक्टर शिवराम शास्त्री' ने ऋग्वेद काल में पारिवारिक संबंधों का उल्लेख किया है। ''पिता का स्थान अत्यंत गौरवपूर्ण था। वह गृहस्वामी होता था, परिवार की संपत्ति का मालिक होता था। परिवार में सभी उसे प्रसन्न रखना चाहते थे। पुत्र पिता के वचनों का पालन करता था। पिता बुध्दि, शक्ति और ज्ञान का आगर समझा जाता है। पिता-माता का इच्छा का अनुवर्तन, संतान द्वारा किया जाता था। पिता का व्यवहार उदार एवं स्नेहपूर्ण होता था।''[25] अर्थात पुत्र का जन्म याने वंश को आगे बढ़ानेवाला, पारिवारिक जिम्मेदारियों को निभानेवाला, कर्तव्यों का पालन करनेवाला कुलदीपक माना जाता है। ऐसा पुत्र उत्पन्न करना एक धार्मिक कर्तव्य माना जाता है। कभी-कभी आर्थिक समस्यों के कारण पिता अपने पुत्र की इच्छाओं को पूरा नहीं कर पाते हैं। 'ट्राई-साईकिल' कहानी का पप्पू अपने पिता से छोटी साईकिल माँगता है। परंतु देवराज की इतनी कमाई नहीं कि जल्दी ही पुत्र की इच्छा पूर्ति करें। 'साईकिल के जिद् करने पर देवराज पप्पू को पिटता है और पप्पू उसी दिन बीमार पड़ जाता है। पप्पू को अस्पताल में भरती किया जाता है। देवराज का विवश, बेबस, दयनीय वर्णन लेखक ने इस तरह किया है - ''दिल बेहद उदास था, जी चाहता था, उड़कर अस्पताल पहुँच जाय पप्पू के संबंधि सैंकड़ो बाते याद आ रही थी उसे। जब वह पैदा हुआ था। ....जब उसने घुटनों के बल चलना सीखा था... जब वह पहले

पहल पांव पर खड़ा हुआ था।... अचानक उसे उस दिन की याद आ गयी जिस दिन गाडी के लिए जिद् करने पर उसने उसे बुरी तरह पीट दिया था।... दिल में जैसे किसी ने छुरा घोंप दिया हो.. खच!''[26] अर्थात एक पिता अपने बेटे की हर ख्वाईश पूरी करना चाहता है, परंतु इसमें कभी उसे अपयश आता है, तो एक पिता का दिल पश्चाताप की खाई में डूब जाता है।

एक पिता अपने पुत्र के लिए क्या नहीं करता? कितनी आशाएँ, महत्त्वांकाक्षाएँ रखता है। आँखों के दीप जलाकर अपने बेटे को पालता है। 'जिंदा मुर्दा' कहानी का पिता अपने बेटे को डॉक्टर बनाने के लिए जीवन की सारी खुशियाँ कुर्बान करता है। लेकिन एक दिन सांप्रदायिक दंगे में उसका डॉक्टर बेटा मारा जाता है। उस समय उसकी अवस्था कितनी दयनीय हो गयी कि मानो वह पत्थर की मूर्ति बन गया है - ''बाप ने बेटे को इस हालत में देखा और वह पत्थर हो गया। जड़ हो गया। और कोई प्रतिक्रिया उसके जिस्म में नहीं हुई। न वह रोया न सिसका, न कुछ बोला। लोगों ने कहा, ''बाबा रोओ! रोओ! कि तुम्हारा दुख आँसूओं में धुल जायें।''[27] अर्थात अपने जवान बेटे की मौत देखकर एक पिता जीवंत होते हुए भी चलता-फिरता मुर्दा बन गया था।

दुनिया के हर पिता को लगता है, कि अपना बेटा डॉक्टर, इंजीनियर बने लेकिन आर्थिक कठिनाईयों के कारण वर्तमान युग में डॉक्टर, इंजीनियर बनाना आसान काम नहीं है। इसलिए एक मध्यमवर्गीय पिता अपने बेटे की चिंता में हमेशा खोया-खोया रहता है। उसकी पढ़ाई की चिंता पिता को खाई जाती है - 'डायरी के कुछ पन्ने'कहानी में कपूर साहब अपने बेटे बिट्टू को इंजीनियर बनाने का सपना देखते है लेकिन घर के जिम्मेदारियाँ तथा आर्थिक कठिनाईयों के कारण बीएसी करने के लिए कॉलेज में भेजते है। कपूर साहब बेटे की चिंता में कहते है - ''देख रहा हूँ, पढ़ाई में उसका दिल बिल्कुल नहीं लगता। मैंने तो उसे कभी घर पर पढ़ते देखा नहीं। कालेज भी एक डायरी लेकर जाता है। कोई पुस्तक मैंने कभी उसके पास नहीं देखी। कालेज की पढ़ाई में दिल नहीं लग रहा है। ऐसा शायद इस वजह से हुआ है कि हायर सेकंडरी और इंजीनियरींग में दाखिले के इम्ताहानों के तैयारी के लिए इसने बेहद मेहनत की..... और फायदा कुछ नहीं हुआ....।''[28] अर्थात हर

पिता अपने बेटे की चिंता करता है। जब तक वह सही राह पर चलकर अपने जिम्मेदारियाँ सही ढंग से नहीं निभाता, पिता की चिंताएँ बढ़ती नजर आती है। वर्तमान युग में पिता-पुत्र में दरार पड़ने का प्रमुख कारण है - 'आज की बेकारी' आज युवक बेकारी की समस्या से तंग आ गया है। इसलिए घर में उसकी कोई हैसियत नहीं सभी आप्त जनों की झिडकियाँ उसे सहनी पड़ती है। लेकिन एक पिता कैसे चूप रह सकता है। 'कुत्ता-जिंदगी' कहानी का रमेश सुशिक्षित बेकार युवक है, उसके पिता उसे बड़े-बड़े लोगों से मिलवाने ले जाते है। और मिन्नत के स्वर में कहते है - "बाबू साहब, इसके लिए भी छोटा-मोटा काम ढूँढ दीजिए। आपकी बहुत मेहरबानी होगी ..... हीले रिजक, बहाने मौत।"[29] अर्थात पुत्र के साथ पिता को भी दर-दर की ठोकरे खानी पड़ती है। रमेश को नौकरी नहीं मिलती तो उसके पिता उससे कई दिनों तक नाराज रहते है। उन्हें लगता है कि अपना बेटा बिल्कुल पालतु बन गया है। अर्थात यहाँ बेरोजगार, बेकारी की समस्या को उद्घाटित किया है।

आधुनिक युग में युवा वर्ग की बेकारी, आर्थिक कठिनाईयाँ, स्वार्थ आदि के कारण आज का युवक संवेदनाहीन हो गया हैं। 'एक वीतरागी के नोटस्' कहानी पिता-पुत्र के विचार-वैभिन्यता को चित्रित करती हैं। वृध्द पिता घर के लोगों के स्नेहहीन व्यवहार के कारण वृध्दाश्रम चले जाते हैं। आवास की समस्या के कारण पुत्र पिता के साथ कटूता पूर्ण व्यवहार करता है। घर की स्थिति देखकर पिता वृध्दाश्रम जाते हैं लेकिन "बार-बार पीछे मुड़कर देखते हैं। अब भी उन्हें आशा थी कि कोई उन्हें रोकने आयेगा....।"[30] अर्थात बूढ़े पिता की आशा थी कि बेटा जाते समय एक बार तो रोकने आयेगा, लेकिन संतान अपने कर्तव्यों से मुखर जाते हैं। परिणाम स्वरूप पिता-पुत्र का आदर्श रूप आज समाज से विलिन होता दिखाई दे रहा हैं।

तात्पर्य -

(1) आज के युग में पिता-पुत्र जैसे आत्मीय-स्नेहील रिश्तों में दरार निर्माण हो गई हैं।

(2) पिता-पुत्र के स्नेहिल संबंधों का चित्रण अधिक उत्कटता से लेखक ने किया हैं। किसी कारण से पुत्र की मृत्यु होती हैं तो पिता की अत्यंत दयनीय अवस्था का चित्रण लेखक ने बड़ी मार्मिकता से किया है।

3.6.3 पिता-पुत्री संबंध-

पिता-पुत्री के संबंध सबसे पवित्र तथा संवेदनशील होते हैं परंतु बदलते परिवेश में इन संबंधों में भी परिवर्तन आ गया है। आर्थिक, सामाजिक, शैक्षणिक कारणों से युवतियों की मानसिक चेतना में परिवर्तन आया हैं। आज लड़की लड़कों से कई आगे निकल गई हैं, उसने समाज में अपना एक स्थान निर्माण किया हैं। आज वह चूल्हा-चौके तक सीमित न रहकर बादलों में सैर करती है, आकाश को छूती हैं। फिर भी इक्कीसवीं सदी के द्वार पर खड़े भारतीय समाज में बेटी को जन्म देना अशुभ माना जाता है।

सावित्रीबाई फुले, फातिमा शेख से लेकर आज तक आधुनिक विचारों की प्रशासनिक, राजनैतिक क्रीड़ा क्षेत्र में ऊँची उड़ान भरेनवाली कई वीरकन्या हुई हैं - आज कार्यरत है, लेकिन इसके साथ यह भी कड़वा सच है कि हमारी समाज की कई लड़कियाँ लिखना-पढ़ना नहीं जानती उनमें से कई दहेज के नाम पर जलाई जाती है अथवा आत्महत्या करती है। आज भी कई युवतियाँ पारिवारिक हिंसा से, अन्याय-अत्याचार से त्रस्त हैं। इस तरह समाज में एक तरफ उँचाईयों को छूने वाली आदरणीय नारियाँ है और दूसरी तरफ समाज तथा परिवार से शोषित नारियाँ अपना जीवन व्यतित करती नजर आती हैं।

पिता को सबसे अधिक चिंता बेटी की शादी की होती हैं अगर घर में जवान बेटी हो, तो उसके पिता को रात-दिन चैन, सुकून नहीं मिलता है। ऐसे संवेदनशील पिता के साथ समाज में ऐसे भी पिता है कि जो अपने स्वार्थ तथा वर्चस्व के कारण बेटी की जिंदगी तबाह कर देते है। इसका चित्रण लेखक ने 'कंकाल हंसता है' कहानी में बड़ी मार्मिकता से किया है। कहानी का पिता अपनी कुल की इज्जत तथा झूठा अहंकार को पाले हैं और लोगों की सहानुभूति पाने के लिए आधुनिक विचारों का ढोंग करते हैं। गाँव के सभी जाति के लोगों को एक ही

पंक्ति में भोजन देते हैं लेकिन धर्मसिंह की बेटी संगीता जब नीच जाति के मास्टर लड़के से विवाह करना चाहती हैं, तो झूठे अहंकार और उँचे खानदान की इज्जत का ख्याल उनके दिल में आता है। लेकिन संगीता का दिल रखने के लिए मास्टरजी से शादी के लिए मंजूरी देते हैं। दूसरी तरफ राजनीतिक दाँवपेच रचकर एक रात मास्टर को ही गायब करते हैं। "…. कुछ दिन बाद उनके विषय में गांव में बहुत भयानक-भयानक अफवाहें उड़ने लगी थीं, जिन्हें सुनकर संगीता पत्थर हो गयी थी, बिल्कुल जड़…"[31]

इस तरह खानदान की झूठी इज्जत और शानों शौकत के कारण पुत्री के सपनों की बलि चढ़ाने वाले पिता का चित्रण प्रस्तुत कहानी में हुआ तथा पिता-पुत्री में निर्माण हुए अलगाव की स्थिति का अंकन भी किया है।

हर पिता को ऐसा लगता हैं कि उनकी बेटी एक काँच का बर्तन है अगर किसी कारण भंग हो जायेगा तो खानदान की इज्जत, घर की आबरू चली जायेगी। इसलिए प्रत्येक बाप अपनी बेटी पर निर्बंध लगाता है। उसे घर के बाहर कदम रखने की इजाज़त नहीं होती। उस पर अनुशासन लगाये जाते हैं। 'पर कही तितली' कहानी में ज्योति के पिता उसे आगे पढ़ने के लिए मना करते हैं। क्यों कि हॉस्टेल में रहकर पढ़ना, लड़कियों को अकेले गाँव के बाहर भेजना उन्हें संकटों को आमंत्रण देने के जैसे लागता है। माता-पिता का अमित स्नेह पानेवाली कन्या सांप्रदायिक धर्म विद्वेष व सामाजिक विषमताओं के कारण परिवार का बोझ बन जाती है। बेटी सयानी होने पर पिता को उसके शादी की चिंता सताने लगती है। नूरा का परिवार पाकिस्तान जाने के लिए इसलिए तैयार होता है ताकि पाकिस्तान में सभी मुस्लिम लोग जाकर बसे है तो 'नूरा' के लिए अपनी जाति का वर यहाँ मिलना मुश्किल हैं। इसलिए वे वीर से कहते हैं कि "रहना तो चाहता हूँ, बेटा! अपना वतन छोड़ने को किसका दिल चाहता है!…..लेकिन नूरा का क्या करूँ? कहाँ करूँगा इसका निकाह? नज़र आता है कहीं कोई लड़का?"[32] अर्थात एक पिता के अपने बेटी के लिए विवश तथा बेबस हुए स्वर को लेखक ने उजागर किया हैं।

"भारतीय परिवार में नारी आज सामाजिक क्षेत्र में पदार्पण कर चुकी है। शैक्षणिक, आर्थिक, वैचारिक दृष्टि से आज वह जागृत हुई है। फलतः नारी संबंधी परंपरागत धारणाएँ एवं मान्यताएँ बदली हुई हैं"[33] अर्थात आज नारी आर्थिक दृष्टि से आत्मनिर्भर एवं स्वावलंबी बन गयी हैं। स्वार्थ से भरे हुए संसार में पेट की आग बुझाने के लिए बेटी को वेश्या व्यवसाय करने के लिए मजबूर करने वाले पिता का अंकन 'कंकाल'कहानी में किया हैं। 'समय के चरण' कहानी में कम्मो के पिता रीति-रिवाजों की आड़ में शादी के नाम पर अपनी लड़की को बेच देना चाहते थे। कम्मों की शादी तय करते समय उसके पिताजी कहते हैं -"दो हजार से कौड़ी कम नहीं। ब्याह का खर्चा अलग। हजार-हजार की तो लड़की की एक-एक आंख ही है। देख लो...।"[34] अर्थात एक पिता अपनी बेटी की भावनाओं की अपेक्षा व्यवहारिकता को अधिक महत्त्व देते हैं। इसलिए पिता-पुत्री में अलगाव निर्माण होता हैं।

तात्पर्य -

(1) लेखक ने अपनी कहानियों में पिता-पुत्री के संबंधों में प्रेम, आदर, आत्मीयता, चिंता के साथ कुण्ठित, साहसी, आत्माभिमानी, निराशावादी आत्म-पीड़क, पर-पीड़क, पलायनवादी पिता-पुत्री के सम्बधों का चित्रण किया है। इसलिए इन संबंधों में आदर, प्रेम, अपनत्व के साथ अलगाव, दूरी, स्वार्थ, निराशा दृष्टिगोचर होती है। पुत्री की अपेक्षा पिता ही इज्जत, प्रतिष्ठा, अर्थ इन्हीं कारणों से पुत्री पर अन्याय करता दिखाई देता है।

3.6.4 माता-पुत्र संबंध :

माँ अपने बेटे से निस्वार्थ प्रेम करती है। उसकी लंबी उम्र के लिए हमेशा प्रार्थना करती हैं। ममता, वात्सल्य की भावना नारी के जननी के रूप का संबंध उसके अपने रक्त से होता है। इसलिए पिता से कहीं अधिक माँ वात्सल्यमयी होती हैं। वह हमेशा संतान के स्नेह और सहवास की प्यासी रहती है। 'जीवन दीप जलता रहे' कहानी की माँ पुत्र के मृत्यु के गम में पागल हो गई हैं। वह प्रतिकूल परिस्थिति में पति के देहान्त के बाद बेटे के लिए जीवनयापन करती है, किंतु उसका

बेटा 'बीरू' फौज में शहीद होता है। उसके आने का इंतजार करती हैं और नदी के किनारे पच्चीस साल से दीया जलाया करती है। कभी-कभी छोटे बच्चे "पगली! पगली " पुकारते वे उसका पीछा करते हैं। पर भागवती गालियां देने के बजाय उन्हें आशीषें देती है - "तुम युग-युग जीओ !.... तुम्हारा बाल भी बांका न हो।"[35] अर्थात माँ की ममता, प्रेम हैं, जो हमेशा दुवाएँ देती है।

पति की मौत के बाद नारी अपने पुत्र के लिए जीवित रहती है, बचपन से लेकर जवानी तक वह अपने बेटे को अपने हाथों से पाल-पोस कर बड़ा करती हैं। अपने बेटे के अच्छे कार्य के लिए माँ को हमेशा गर्व होता है। नारी पति वियोग को सह सकती है, लेकिन पुत्र वियोग को सहना मुश्किल हैं। 'माँ के आंसू' कहानी में अभिव्यंजित हुआ है कि दीपू स्कूल से आता है और अपनी बीमार माँ के लिए दवाइयाँ लाने के लिए शर्मा अंकल के यहाँ कोयला ढ़ोने का काम करता हैं। दीपू के घर न आने से माँ परेशान हो जाती हैं। दीपू के घर लौटते माँ उसे डाँटने लगती है तभी दीपू अपने माँ को दवाइयाँ देकर कहता है - "देखिये मम्मीजी मैं आपके लिए दवाई लाया हूँ। आपको बुखार आ रहा है न।"[38] अर्थात माँ-बेटे के परस्पर स्नेह की मनोरम झाँकी प्रस्तुत की गई है।

आज बेकार युवक की यह दयनीयता है कि वह अपने परिवार के प्रति कर्तव्य निभा नहीं सकता है। 'जागो' कहानी का युवक अपनी माँ की बीमारी का कोई इलाज नहीं कर सकता और माँ के मौत की बाद कुछ देर में वह अपने प्राण भी त्याग देता है।

नयी और पुरानी पीढ़ी का सदैव संघर्ष चलता है। पुराने मूल्यों के बदले नये मूल्य निर्माण होते हैं। स्वार्थ के कारण मानसिक दूरियाँ बढ़ रही हैं। माँ-बेटे के निस्वार्थ प्यार में आर्थिक स्थिति बाधा बन कर खड़ी है। स्नेह संवेदनाएँ समाप्त होकर स्वार्थ और अहंकार जनित व्यावहारिक समझ पनप रही हैं। 'शाही-खेल' कहानी में माँ-बेटा एक दूसरे को भला बुरा कहते हैं। दोनों का झगड़ा शुरू होने पर सारे गाँव वाले देखने के लिए आते हैं - "जा-जा बुढ़िया। मर कहीं जा कर।" गुलजारी हाथ हिलाते हुए उँची आवाज में बोला, "वापस न आना, कभी

वापस न आना। वहीं कुण्ड में डूब मरना या किसी पेड़ में फाँसी लगा लेना। अगर आ गयी तो मैं तुम्हें....''[39]

बुढ़िया अपनी मौत से बहुत ड़रती थी। मौत का नाम सुनते ही उसके तन-बदन में आग लग गयी। वह एकदम मुड़कर खड़ी हो गयी, और टाट का टुकडा एक ओर फेंक दिया और इतने जोर से चीखी की वृक्षों पर से पक्षी तक उड़ गये।.... ''मर तू! मरे राण्ड। तेरे बच्चे....।... ओए लोगों, यह गुलजारी मुझे मारना चाहता है।''[40] अर्थात यहाँ कुमाता तथा कुपुत्र का चित्रण किया है। दोनों मे सहनशीलता का अभाव है। इसलिए माँ-बेटे में कटुतापूर्ण संबंध दृष्टिगोचर होते है।

तात्पर्य -

(1) माँ का हृदय विशाल एवं ममता से भरा होता है। नारी पति को खोकर जिंदा रह सकती हैं, लेकिन एक माँ अपने जवान बेटे की मृत्यू नहीं देख सकती हैं।

(2) वर्तमान युग में पारिवारिक संबंध बिखरे हुए नज़र आते हैं। प्रेम, अपनत्व, त्याग, स्नेह के साथ स्वार्थ, उपेक्षा, तनाव, असंतोष, दूरी, आदि कारणों से माँ-बेटे में अलगाव निर्माण हुआ दिखाई देता है।

3.6.5 माँ-बेटी संबंध :

बेटी माँ का वात्सल्य एवं करूणा का प्रतिरूप होती है। एक माँ हमेशा बेटी के उज्ज्वल भविष्य की चिंता करती हैं तथा उँचे ख्वाब बुनती हैं। जिन समस्याओं से माँ गुजरती हैं उन समस्याओं से बेटी गुजरे ऐसा माँ कभी नहीं चाहती हैं। इसलिए माँ अपनी सलाहों के माध्यम से सही मार्ग दिखाने का कार्य करती हैं। बेटी का भविष्य सँवारने के लिए माँ अधिक सहाय्यता करती हैं। माँ और बेटी का अभिन्न एवं दृढ़ नाता होता है। माँ के दुःख, दर्द का एहसास सबसे ज्यादा बेटी को होता है। बेटी जब जवान होती है तो माँ उसकी सहेली बन जाती है और उसे अच्छे-बुरे का ज्ञान देती हैं। आधुनिक युग की माँ बेटी को ही कुलदीपक मानने लगी हैं तथा बेटी भी पढ़-लिखकर परिवार की जिम्मेदारी को एक बेटे की तरह

निभाने की कोशिश करने लगी हैं ।

'सांपन' कहानी की माँ अपने पति को बीमारी से बचाने के लिए अपनी छोटी बेटी को विदेशी दांपत्य को बेचती है। याने एक ओर संवेदनशील स्नेहपूर्ण ऐसे माँ-बेटी के संबंध होते हैं, तो दूसरी ओर समाज में ऐसी भी माँ है जो परिसिथति वश बेटी का भविष्य इस तरह सोचने पर मजबूर होती है - ''भीख़ मंगवाने वेश्यावृत्ति करवाने या भीतरी अंग बेचनेवाली बात शायद झूठ हो। इतनी दूर से, इतने पैसे खर्च करके, ले जाकर क्या ऐसे काम करवायेंगे? फिर कचहरी में लिखा-पढ़ी भी तो होती है। उसके बाद ऐसे काम करवाये जा सकते हैं क्या? साज नहीं मिलेगी?''[41] अर्थात रामकली का मन एक भयानक मानसिक संघर्ष करने लगता हैं। गरीबी, मजबूरी, लोभ उसे अपनी बेटी को बेचने के लिए मजबूर करता है। अपनी बच्ची को दूसरों के हाथों सौंपते समय वह दुनियाँ की हर बातों का विचार करती हैं, लेकिन गरीबी, मजबूरी, आर्थिक कठिनाई रामकली को सोचने के लिए मजबूर करती है - ''और अगर सच भी हो, तो भी क्या है! यहाँ ही क्या अच्छा होगा उसका? गेरा साहब ने ठीक ही तो कहा था। अव्वल तो भूख या बीमारी से मर जायेगी। अगर बच भी गयी, तो भी क्या बन पायेगी? किसी गरीब की बीबी, भिखारिन या...।''[42] अर्थात एक निम्न वर्गीय माँ मानसिक संघर्ष में फँसकर बेटी का भविष्य किस तरह होगा इसका सोच-विचार करती है।

'एक और सावित्री' में नंदा शादी के पश्चात भी अपनी बूढ़ी माँ का सहारा बनती हैं। इस तरह माँ-बेटी के संबंधों का मार्मिक चित्रण कहानियों में लेखक ने किया हैं।

तात्पर्य -

(1) माँ-बेटी के संबंध प्रेम, स्नेह के सौरभ से युक्त होते हैं। तो कभी स्वार्थयुक्त दिखाई देते हैं।

(2) बेटी का भविष्य माँ के हाथ में होता है, माँ ही बेटी की मार्गदर्शिका होती है लेकिन कभी-कभी परिस्थितिवश माँ की ममता भी ड़गमगा जाती हैं।

3.6.6 भाई-बहन संबंध :

भारतीय परिवार में पिता के पश्चात बड़े भाई का स्थान महत्त्वपूर्ण माना जाता है। परिवार का सबसे बड़ा बेटा होने के नाते उसे समस्त पारिवारिक जिम्मेदारियाँ उठानी पड़ती है। भाई-बहन का संबंध पवित्र तथा विश्वास का नाता है, उनका प्रेम वासना से कोसों दूर होता है। वह सात्विक तथा निस्वार्थ प्रेम होता हैं, लेकिन आज के वर्तमान युग में भाई-बहन के संबंध में स्वार्थ दिखाई देता हैं। बहन की कमाई तथा आर्थिक स्तर आत्मकेंद्रित प्रवृत्ति आदि कारणों से भाई-बहन जैसे रक्त संबंधों में भी दरारें पैदा हो गई है। इन प्रेम परक संबंधों में भी आर्थिक संघर्ष एवं लालच निर्माण होता है इसी स्वार्थनीति के कारण स्वार्थी भाई बहन के साथ कूटनीति करता हैं। 'लगे रहिए मंगतराम जी' कहानी में मंगतराम जी अपने सपनों के महल खड़े करने के लिए अपनी छोटी बहन सुधा का रिश्ता तोड़ देता है। ताकि उसके आनेवाले मासिक वेतन से घर में कुछ सहायता हो। वह मान लेता हैं कि "सुधा की तनख्वाह में से वह हर महीने तीन सौ रूपये उसके खाने-रहने के खर्च के एवज में अपने पास रख लेता था, जिसके कारण घर में कुछ खुशहाली आ गयी थी। यह आमदनी शीघ्र ही बन्द हो जायेगी, यह विचार दिमाग में लाने तक में उसे भय लगता था।"[43] यहाँ पर भाई की स्वार्थी प्रवृत्ति दिखाई देती हैं जिस बहन पर वह बचपन से बेटी की तरह प्रेम करता हैं,उसी की खुशियाँ अपने स्वार्थ के लिए दाँव पे लगाता हैं। शादी टूट जाने के बाद सुधा मंगतराम जी को बिना से कुछ कहे गाँव जाती है और वही अपना तबादला करवाती हैं। इस तरह भाई-बहन में स्वार्थ के कारण आधुनिक युग में अलगाव - दूरी बढ़ती दिखाई देती हैं।

आज के परिवर्तित परिवेश में भाई का रूप परंपरागत न रहकर वह स्वार्थी तथा आत्मकेंद्रीत होता जा रहा हैं। समाज में ऐसे भी स्वार्थी भाई होते हैं जो घर की जवान बहन की तरफ अनदेखा करते हैं, उसकी कोई चिन्ता उन्हें नहीं होती हैं। भाई-बहन के कोमल संबंधों में नीरसता, शुष्कता किस प्रकार निर्माण हुई हैं इसका चित्रण लेखक ने 'खलनायक' कहानी में किया हैं - नीलू कमानेवाली लड़की है, लेकिन उसके भाई उसकी कोई मदद नहीं करते हैं। वह अपने भाईयों के बारे में निर्मल से एक जगह कहती हैं - "छोटी भाई के साथ उसकी बोल-चाल

बन्द है। बड़े भाई, जिनके साथ कि वह अब रहती हैं, अपने कामों में ही व्यस्त रहते हैं। और कोई है नहीं और उम्र बढ़ती जा रही है.... ।''[44] अर्थात आज भाई को बहन की तरफ ध्यान देने के लिएवक्त मिलना मुश्किल हो गया है। आज के तकनीकि युग की यह देन हैं कि मनुष्य भावनाओं, संवदेनाओं से ज्यादा अपने आप में खोया रहता हैं। दूसरी ओर नीलू का मुँह बोला भाई निर्मल उसकी शादी के लिए चिंतित है, उसके बड़े भाई से मिलकर नीलू की शादी तय करने के लिए कहता हैं। इस तरह वर्तमान युग में खून के रिश्ते कागज के रिश्तें के समान हो गये हैं जो सिर्फ नाम से एक दूसरे से जोड़े हैं।

'एक वीतरागी के नोटस्' कहानी का भाई अपनी पागल बहन का इसलिए इलाज नहीं करता है क्यों कि वह अच्छी होकर अपने ससुराल में जायेगी तो उनको दहेज देना पड़ेगा और आर्थिक अभाव झेलने वाले परिवार में दहेज के लिए पैसे कहाँ से लाते? वह अपनी पत्नी से कहता है कि ''भली लोके, इसका इलाज कराने की कोई आवश्यकता नहीं है। इस हाल में यह बिल्कुल सन्तुष्ट मान लो, इलाज करवाने पर यह ठीक हो गयी और पहली दशा में आ गयी, तो फिर जो यह हर समय लम्बी-लम्बी आहें भरती रहेगी और दिन-रात हसुये बहाती रहेगी, उसका तू क्या इलाज करेगी... बोल?...''[45] अर्थात आज बढ़ती महँगाई तथा आर्थिक विवशता से परिवार की जिम्मेदारी उठानेवाला भाई पागल बहन का बोझ ढोते-ढोते तंग आ गया हैं।

'खुशी भरा दिन' कहानी में भाई अपनी बहन की शादी में नहीं जा सकता, बेकारी तथा आर्थिक कमजोरी के कारण न वह कोई तोहफा ले सका है न वहाँ तक पहुँच सकता हैं। वह सिर्फ खुद को समझा रहा है कि ''आज उसे रोना नहीं है,दुखी नहीं होना है, यह बहन के लिए अपशकुन होगा।''[46] अर्थात आज के युग में बेकारी इस तरह फैल गई हैं कि एक भाई बहन के विवाह में नहीं पहुँच सकता सिर्फ उसे आशीर्वाद देता हैं। यह उसकी अपनी बेबसी है। साधुराम दर्शक जी ने भाई-बहना के प्यार में अर्थाभाव किस प्रकार जहर फैलाता है इसका वास्तविक चित्रण अपनी कहानियों में किया है।

निष्कर्ष :

यह कहा जाता सकता है कि एक ही माँ के कोख से जन्म लेने वाले भाई-बहनों का रिश्ता अटूट प्रेम का, अपनत्व का, स्नेह का माना जाता हैं। संकट के समय भाई-बहन दोनों एक दूसरे का साथ देते हैं। एक बहन का दुःख, दर्द दूर करनेवाला एक मात्र भाई होता हैं। भाई-बहन एक-दूसरे के लिए त्याग, समर्पण की भावना रखते हैं। लेकिन आज मनुष्य इतना स्वार्थी हो गया है कि एक भाई अपने सपनों के महल खड़े करने के लिए बहन के ख्वाबों को काँच की तरह तोड़ता हैं। लेखक ने कहानियों में स्वार्थ में अंधे बने भाईयों का चित्रण किया हैं। समग्र विवेचन से यह स्पष्ट होता हैं कि आज भले भाई-बहन का मिथ टूट रहा हैं। आर्थिक कठिनाईयों से भाई बहन मुँह मोड़ रहें हैं, फिर भी अन्य संबंधों की अपेक्षा भाई-बहन का रिश्ता अटूट, आजन्म निभाये जाने वाला रिश्ता हैं।

3.6.7 सास-बहू संबंध :

भारतीय परंपरा में चले आये सास-बहू के संबंध में तू-तू, मैं-मैं होती ही हैं, उनका संबंध करेले की सब्जी जैसा होता हैं। कभी झगड़ते हैं, तो कभी हँसती-बोलती भी हैं। सास जब तक घर के काम करती है तब तक बहू उसके साथ नम्री से पेश आती हैं लेकिन जब सास खटिया पकड़ लेती है, तो बहू उसकी सेवा करने में आना-कानी करती है। 'बूचड़खाना' कहानी में बहू सास के बारे में कहती हैं "…. वे बहुत जिद्दी और चिड़चिड़ी हो गयी है। जरा-जरा सी बात पर झगड़ पड़ती हैं। आत्महत्या करने की धमकी देती हैं। एक बार तो चली भी गयी थी।"[47] अर्थात वर्तमान युग में बहू सास का आदर नहीं करती, बल्कि सास बहू के सामने लाचार तथा बेबस दिखाई देती हैं।

निष्कर्ष -

स्वामित्व, विचारों में असमानता, प्रभुत्व जगाने की भावना आदि के कारण सास-बहू के संबंधों में विषमता पाई जाती है। वर्तमान युग में भी सास-बहू के संबंधों में परिवर्तन आने लगा है। मानो बहू सास बनती जा रही है।

3.6.8 ससुर-बहू संबंध :

एक विवाहित स्त्री के लिए सभी रिश्ते-नाते बदल जाते हैं। माता-पिता की जगह सास-ससुर आ जाते हैं। 'ससुर' के लिए पुत्रवधू बेटी के समान होती है। भारतीय परंपरा में बहुएँ ससुर का आदर करती थी। उनके सामने पलके उठाकर बातें करना मुश्किल था। वर्तमान काल की बहू ससुर का कोई आदर, सम्मान नहीं करती है। 'जिप्सी की तलाश' कहानी में बहू और बेटा घर का 'कुत्ता' खो जाने पर 'पुलिस थाने' तक हंगामा मचाते है, लेकिन सबेरे से घर की बड़ी व्यक्ति कहाँ चली गयी है इसका पता किसी को नहीं है। रात के खाने के समय चोपड़ा साहब को पिताजी की याद आती है, उसी समय उनकी पत्नी कहती हैं कि ''मैं तो जिप्सी के चक्कर में भूल ही गयी। पिताजी तो सुबह नौ बजे ही निकल गये थे.... जरा नाश्ता देने में देर हो गयी थी।... क्या करूँ, आजकल जरा-जरा सी बात पर बच्चों की तरह रूठ जाते हैं। लेकिन मुसीबत तो मेरी है। अब इस समय कहाँ ढूँढती फिरूँ उन्हें.... पर आप खाना खाइए। उनका तो रोज का ही काम है। बच्चे तो हैं नहीं कि गुम हो जायेंगे। बैठे होंगे किसी पार्क में इस उड़ीक में कि कोई उन्हें मनाने आए। या चले गये होंगे अपने लाड़ले बेटै के पास। पहले भी तो चले गये थे।... थोडी देर तक और न आए, तो देखती हूँ....।''[48] अर्थात परिवार में आजकल पालतू कुत्ते का जो स्थान वह बूढे पिता का नहीं। अतः इन स्नेहिल संबंधों में संवेदना, प्रेम, अपनापन, विश्वास में न्यूनता दिखाई देती हैं।

'एक वीतरागी के नोट्स' कहानी का बेटा आवास की कठिनाई के कारण पिता को वृध्दाश्रम भेज देता हैं। ताकि पत्नी को घर के काम करने में आसानी हो सके।

निष्कर्ष :

निष्कर्षतः यह कह सकते हैं कि कोई भी पिता अपने जीवन के अंतिम दिन अपने बाल-बच्चों में हँसी-खुशी गुजारना चाहता है। लेकिन आज-कल बहुएँ अलग संसार बसाना चाहती है इसलिए बहु-ससुर के संबंधों में कड़वाहट निर्माण होती हैं। आज की बहू ससुर को 'फालतू' मानती हैं।

3.6.9 ननंद-भाभी संबंध:

भारतीय समाज में ननंद-भाभी का संबंध मधुर है। क्यों कि दोनों समानुभूतिवाली होती है। कभी-कभी इन रिश्तों में भी उदासीनता ,छल-कपट, तनाव, स्पर्धात्मक संघर्ष, मानसिक संघर्ष आदि के कारण कड़वाहट आती हैं जिससे दूरियाँ निर्माण होती है। लेकिन लेखक ने अपनी कहानियों में खून के रिश्तों में बेगानापन, स्वार्थ ज्यादातर दिखाया है। वहाँ इन मधुर संबंध में कैसे स्नेहहीनता दिखा सकते हैं। 'लगे रहिए मंगतराम जी' कहानी की सुधा और उसकी भाभी में ऐसा ही प्यार भरा , छेड़-छाड़ के मधुर झलकियों में बंधा रिश्ता है। सुधा अपने जीवन की हर एक घटना भाभी को एक सहेली की तरह बताती है। भाभी भी उससे बहुत प्रेम करती है, उसका उदास चेहरा देख नहीं सकती। एक दिन सुधा ऑफिस से घर आती है तो उसकी भाभी कहती है - ''क्यों, क्या हुआ? जल्दी बोल। मुझे तो तेरी शक्ल देखकर ही लग रहा था कि कोई बात हुई है।''[49] अर्थात भाभी सुधा के आचरण को अच्छी तरह जानती है। इस तरह सुधा अपनी शादी टूटने की खबर पहले भाभी को सुनाती हैं, तो भाभी को बहुत दुःख होता है।

निष्कर्ष :

संयुक्त परिवार की शाखाएँ इतस्तः फैली हुई है और नंनद भाभी का रूप इस परिवार की एक टहनी है। नंनद-भाभी का प्रेम पारिवारिक संबंधों को दृढ़ बनाता है। यह अभावात्मक रूप एक-दूसरी कहानियों में ही पाया गया है।

3.6.10 दादी-पोता संबंध :

भारतीय परिवार में संयुक्त परिवार होता है। जिनमें तीन पीढ़ियाँ समाविष्ट होती है। लेकिन आज संयुक्त परिवार का यह रूप दुर्लभ होता दिखाई देता है। सूद से जिस तरह व्याज अच्छा लगता है, उसी तरह दादी को बेटे से ज्यादा अपने पोते से प्यार करती है। 'बूचड़खाना' कहानी की दादी अपने पोते की राह तकती रहती है और अब कभी पोता शहर से आता है, तो उसे मनपसंद खाना खिलाती है। परिवार वालों से त्रस्त दादी अपने मन की व्यथा पोते को बताती हैं और उसके साथ शहर जाने की बात करती है। एक दिन उपेक्षाभरी जिंदगी से तंग

आकर दादी अपने पोते से कहती है कि ''मेरा मतलब है कि कोई ऐसा बूचड़खाना नहीं होता, जहाँ बूढ़े निकम्मे लोगों को.... बूढ़े पशुओं को....''[50] अर्थात दादा दादी अंतिम दिन अपने पोता-पोती के साथ गुजारना चाहते है, उनकी खुशियों में शामील होना चाहते हैं। परंतु उनकी यह इच्छा पूर्ण नहीं हो पाती।

निष्कर्ष :

दादी और पोते के संबंधों में कितनी भी विषम भावनाएँ निर्माण हो उनका स्नेहबंध अटूट रहता है। और दादी बेटे से कई ज्यादा अपने पोते से प्रेम करती है।

निष्कर्ष :

सार रूप में कह सकते हैं, कि साधुराम दर्शक जी की कहानियों में 'निम्नमध्यवर्ग तथा मध्यवर्ग परिवार' केंद्र में रहा हैं। उन्होंने वर्तमान युग में चित्रित दाम्पत्य तथा दाम्पत्येत्तर अनेक संबंधों का उद्‌घाटन यथार्थ, संवेदनशील तथा सूक्ष्मता से किया हैं।

भारतीय जीवन प्रणाली में 'परिवार संस्था' को महत्त्वपूर्ण स्थान है। 'परिवार' शब्द का अर्थ संस्कृत के 'परि' उपसर्ग पूर्वक 'पृ' धातू से 'धत्र' प्रत्यय के योग से बना हैं। परिवार की परिभाषा अनेक विद्‌वानों ने की है।....''रक्त संबंधी सदस्यों के समूह को परिवार कहा जाता है।'' अर्थात परिवार में रक्त संबंधियों का समावेश होता हैं। आधुनिक समाज में बिगड़ते युवा वर्ग को सही-गलत, अच्छे-बुरे की पहचान कराने के लिए परिवार सुसंस्कृत होना महत्त्वपूर्ण है।

परिवार का आधार 'दाम्पत्य जीवन' हैं, जिसके बलबूते पर मानव जीवन के पहलू बनते-बिगड़ते है। लेखक ने अपनी कहानियों में दाम्पत्य जीवन के सफल-असफल संबंधों का उद्‌घाटन किया है। साथ ही परिवार के तथा अन्य पारिवारिक बनते-बिगड़ते संबंधों का विवेचन कुशलता से किया है। आज के समाज में अनेक परिवारों में तनाव, संघर्ष पाश्‍चात्य सभ्यता तथा संस्कृति का अनुकरण दिखाई देता हैं। साधुराम दर्शक जी की कहानियों में चित्रित परिवार का स्वरूप भारतीय आदर्शों के अनुरूप तो है, लेकिन वह युगीन परिस्थितिजन्य एवं

सामाजिक, आर्थिक समस्याओं से लिप्त हैं।

सफल-असफल दाम्पत्य जीवन का चित्रण अनेक कहानियों में हुआ हैं, परंतु सफल दाम्पत्य जीवन की तुलना में असफल दाम्पत्य जीवन का चित्रण अधिक हुआ हैं। उन्होंने सफल दाम्पत्य जीवन के विविध पक्षों पर दृष्टि पात किया है -

(1) पति-पत्नी में आत्मीक प्रेम आवश्यक हैं।
(2) पति-पत्नी एक दूसरे के प्रति एकनिष्ठ होने चाहिए।
(3) पति-पत्नी में पारस्परिक सेवाभाव होना आवश्यक है।
(4) पति-पत्नी दोनों में श्रद्धा युक्त प्रेम होना चाहिए।
(5) पति-पत्नी में एक दूसरे के प्रति समर्पण के भाव होने चाहिए।
(6) पति-पत्नी के दिल में एक-दूसरे के प्रति सम्मान की भावना आवश्यक है।
(7) पति-पत्नी में समझदारी आवश्यक है।

सफल दाम्पत्य जीवन की चर्चा करने के उपरांत साधुराम दर्शक की विवेचित कहानियों में असफल दाम्पत्य जीवन के कारण दिखाई दिए हैं। वह निम्न लिखित हैं -

(1) निम्न वर्ग में ज्यादा तर आर्थिक समस्या के कारण दाम्पत्य जीवन विघटित होते दिखाई देते हैं।
(2) असमझदारी तथा अविश्वास
(3) पत्नी पर होने वाले पारिवारिक अन्याय-अत्याचार
(4) दहेज की समस्या के कारण असफल दाम्पत्य जीवन
(5) तनाव एवं कड़वाहट
(6) अनमेल विवाह
(7) पति या पत्नी की रूग्णता के कारण दाम्पत्य जीवन में निर्मित तनाव एवं कड़वाहट।

प्रस्तुत कहानियों में भारतीय मूल्य एवं संस्कार इनका ऱ्हास एक तरफ दिखाई देता हैं, तो दूसरी तरफ यही कहानियाँ मानवता की उँचाई को स्पर्श करती हुई दिखाई देती है। उपर्युक्त विवेचित कहानियों में सम एवं विषम दाम्पत्य संबंधो का तथा अन्य पारिवारिक संबंधों का चित्रण बड़ी ही मार्मिकता से तथा सूक्ष्मता से किया गया हैं। वह निम्नलिखित है -

(1) सफल दांपत्य जीवन में समझदारी, सेवाभाव तथा पतिपरायणता के कारण विश्वास तथा प्रेम में वृध्दि सन्माननीय भावना का होना आवश्यक है, जिसका चित्रण 'असली हकदार', 'पिशाच्च-लीला', 'खलनायक', 'एक और सावित्री' आदि कहानियों में हुआ है ।

(2) असफल बने हुए दाम्पत्य जीवन में आर्थिक कठिनाई, कुरूपता, अज्ञान, अशिक्षा के कारण पति-पत्नी में दूरियाँ, अलगाव, विघटन निर्माण हुआ है। इसका चित्रण'चन्द्रकिरण', 'पर कटी तितली', 'दीवारें बोलती है', 'सांपन', 'एक वीतरागी के नोट्स' आदि कहानियों में हुआ हैं। लेखक ने विशेष रूप से निम्नवर्गीय परिवार तथा पारिवारिक सम्बधों के स्नेहिल एवं स्नेहहीन संबंधों का यथार्थ एवं मार्मिकता से चित्रण किया है।

(3) दाम्पत्येत्तर संबंधों का उद्घाटन कई कहानियों में हुआ हैं उसमें पिता-पुत्र के सम-विषम संबंधों का चित्रण निम्नांकित हैं।

(i) समसंबंध 'जिन्दा-मुर्दा', 'ट्राई-साईकिल', 'डायरी के कुछ पन्ने' आदि कहानियों में पिता-पुत्र में प्रेम, आत्मियता, आदर, तथा अपनापन का चित्रण संवेदनशीलता के साथ हुआ हैं।

(ii) विषम संबंध - 'कुत्ता जिंदगी','एक वीतरागी के नोटस्' आदि कहानियों में पिता-पुत्र के पवित्र संबंधों में आदर, आत्मियता के अलावा दूरियाँ, अलगाव दिखाई देता हैं।

(4) पिता-पुत्री के बीच तटस्थता, स्वार्थांधता, जातियता की कर्मठता, उपेक्षापूर्ण व्यवहार का चित्रण हुआ हैं।

(i) विषम संबंध - जातियता के प्रति चरमसीमा की कर्मठता के

'कंकाल हंसता है' कहानी में बेटी की बलि चढ़ाने वाले पिता का चित्रण हुआ हैं।

(ii) 'पर कटी तितली' घर की इज्जत के खातिर अपने बेटी के भविष्य को दाँव पे लगानेवाले पिता का चित्रण हुआ है। जिससे पिता-पुत्री में दूरियाँ दिखाई देती हैं।

(iii) 'अतीत', 'समय के चरण' आदि कहानियों में जातीयता, परंपरा, रीति-रिवाज आदि कारणों की आड़ पिता अपनी बेटी की जिम्मेदारी से मुक्त होना चाहता है। इसलिए बिना सोचे-समझे बेटी के भविष्य का फैसला करता है जिससे बेटियों का भविष्य अंधःकार मय बनता हैं।

(5) माँ बेटे के सम स्नेहिल संबंधों का अंकन 'जीवनदीप जलता रहे', 'माँ के आँसू' आदि कहानियों में संवेदनशीलता के साथ हुआ हैं।

(i) शाही-खेल कहानी में माँ-बेटे के विषम, स्नेहहीन संबंध का उद्घाटन हुआ हैं।

(ii) 'लगे रहिए मंगतराम जी', 'एक वीतरागी के नोट्स', 'खलनायक' आदि कहानियों में स्वार्थी भाईयों का चित्रण हुआ है।

(6) भाई के सम तथा निस्वार्थ वृत्ति का चित्रण खलनायक तथा खुशी भरा दिन कहानी में हुआ हैं।

(iii) 'लगे रहिए मंगतराम जी', 'एक वीतरागी के नोट्स', 'खलनायक' आदि कहानियों में स्वार्थी भाईयों का चित्रण हुआ है।

(7) सास-बहू का विषम संबंध का उद्घाटन 'बूचड़खाना' कहानी में हुआ हैं।

(8) ससुर-बहू के विषम संबंध 'जिप्सी की तलाश', 'एक वीतरागी के नोट्स' आदि कहानियों में उजागर हुए हैं।

(9) नंनद-भाभी के स्नेहिल संबंध का उद्घाटन 'लगे रहिए मंगतराम जी' कहानी में हुआ है।

(10) दादी-पोता के अटूट स्नेह को 'बूचड़खाना' कहानी में उद्घाटित किया है।

संदर्भ सूची

1. डॉ रक्षापुरी - प्रेमचंद के साहित्य और समाज,पृ.14
2. Majumdar D.N. - Races and cultures of India, p.163
3. महेन्द्रकुमार जैन - हिंदी उपन्यासों में पारिवारिक चित्रण से उद्धृत, पृ.5
4. वही, पृ.5
5. रवीन्द्रनाथ मुकर्जी - सामाजिक मानवशास्त्र की रूपरेखा से उद्धृत, पृ.260
6. मैकाइवर एण्ड पेज - सोसायटी, पृ.238
7. राजेन्द्र कुमार शर्मा - प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण, पृ.17
8. रवीन्द्रनाथ मुकर्जी - भारतीय जनता एवं संस्थाएँ, पृ.258
9. राजेन्द्र कुमार शर्मा - प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण, पृ.140
10. वेदालंकार हरिदत्त - हिंदू परिवार मीमांसा, पृ.131
11. डॉ.प्रमिला कपूर - कामकाजी भारतीय नारी, पृ.38
12. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही : असली हकदार, पृ.39
13. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री : एक और सावित्री, पृ.18
14. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ : पिशाच्च लीला, पृ.62
15. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री : खलनायक, पृ.97
16. डॉ. आशा बागडी - प्रेमचंद - परवर्ती उपन्यास साहित्य में पारिवारिक जीवन, पृ.317
17. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री : चन्द्रकिरण, पृ.102
18. पारसनाथ मिश्र - मार्क्सवाद और उपन्यासकार यशपाल, पृ.128
19. सुशीला मितल - आधुनिक हिंदी कहानी में नारी की भूमिकाएँ, पृ.113
20. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही - दीवारें बोलती हैं, पृ.66
21. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री - चन्द्रकिरण, पृ.102
22. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - पर कही तितली, पृ.141

23. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही - दीवारें बोलती हैं, पृ.67
24. डॉ.राजेन्द्र कुमार शर्मा - प्रेमचंद परंपरा की कहानियों में पारिवारिक एवं सामाजिक चित्रण, पृ.201
25. डॉ.मालती आदवानी-लेखिकाओं की नवें दशक की हिन्दी कहानियों में पारिवारिक संबंध, पृ.112-115
26. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही - ट्राई साईकिल, पृ.43
27. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - जिन्दा-मुर्दा, पृ.55
28. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - डायरी के कुछ पन्ने, पृ.20
29. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - कुत्ता-जिंदगी, पृ.65
30. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - एक वीतरागी के नोट्स, पृ.85
31. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - कंकाल हंसता है, पृ.131,132
32. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही -, अतीत, पृ.19
33. माधवी बागी - देवेश ठाकुर के उपन्यासों में नारी, पृ.114
34. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही - समय के चरण, पृ.77
35. साधुराम दर्शक - धारा बहती रही - जीवन दीप जलता रहे, पृ.71
36. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - शाही खेल, पृ.38
37. वही, पृ.38
38. साधुराम दर्शक एक और सावित्री - माँ के आँसू, पृ.15
39. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - शाही खेल, पृ.38
40. वही, पृ.38
41. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - सांपन, पृ.94
42. साधुराम दर्शक,मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ, पृ.94
43. साधुराम दर्शक,लगे रहिए मंगतराम जी, पृ.33
44. साधुराम दर्शक, एक और सावित्री - खलनायक, पृ.95
45. साधुराम दर्शक, धारा बहती रही - एक वीतरागी के नोट्स, पृ.73
46. साधुराम दर्शक, खुशी भरा दिन, पृ.101
47. साधुराम दर्शक- एक और सावित्री - बूचड़खाना, पृ.62

48. साधुराम दर्शक- एक और सावित्री - जिप्सी की तलाश, पृ.83

49. साधुराम दर्शक - मेरी श्रेष्ठ कहानियाँ - लगे रहिए मंगतराम जी, पृ.35

50. साधुराम दर्शक - एक और सावित्री - बूचड़खाना, पृ.34

*****